

---

hariharAShTottaraShatanAmastotram

हरिहराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् अथवा  
श्रीहरिहरात्मकस्तोत्रम्

Document Information

---

Text title : Hari Hara Ashtottarashatanama Stotram

File name : hariharAShTottaraShatanAmastotram.itx

Category : aShTottaraShatanAma, shiva, vishhnu

Location : doc\_shiva

Author : Dharmaraja

Proofread by : PSA Easwaran

Description-comments : Brihatstotraratnakara 1 newer, Narayana Ram Acharya, Nirnayasagar,  
stotrasankhya 225. See corresponding nAmAvalI

Source : skandapurANe kAshIkhaNDe

Latest update : March 25, 2017

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 28, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

हरिहराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् अथवा  
श्रीहरिहरात्मकस्तोत्रम्



हरिहरस्तोत्ररत्नमाला अथवा शिवनारायणस्तोत्रम् च  
श्रीगणेशाय नमः ॥

धर्मराज उवाच ।

गोविन्द माधव मुकुन्द हरे मुरारे

शम्भो शिवेश शशिशेखर शूलपाणे ।

दामोदराच्युत जनार्दन वासुदेव

त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ १ ॥

गङ्गाधरान्धकरिपो हर नीलकण्ठ

वैकुण्ठ कैटभरिपो कमठाब्जपाणे ।

भूतेश खण्डपरशो मृड चण्डिकेश

त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ २ ॥

विष्णो नृसिंह मधुसूदन चक्रपाणे

गौरीपते गिरिश शङ्कर चन्द्रचूड ।

नारायाणासुरनिबर्हण शार्ङ्गपाणे

त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ३ ॥

मृत्युञ्जयोग्र विषमेक्षण कामशत्रो

श्रीकान्त पीतवसनाम्बुदनील शौरै ।

ईशान कृत्तिवसन त्रिदशैकनाथ

त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ४ ॥

लक्ष्मीपते मधुरिपो पुरुषोत्तमाद्य

श्रीकण्ठ दिग्वसन शान्त पिनाकपाणे ।

आनन्दकन्द धरणीधर पद्मनाभ

त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ५ ॥

सर्वेश्वर त्रिपुरसूदन देवदेव

ब्रह्मण्यदेव गरुडध्वज शङ्खपाणे ।

त्र्यक्षोरगाभरण बालमृगाङ्कमौले

त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ६ ॥

श्रीराम राघव रमेश्वर रावणारे

भूतेश मन्मथरिपो प्रमथाधिनाथ ।

चाणूरमर्दन हृषीकपते मुरारे

त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ७ ॥

शूलिन् गिरीश रजनीश कलावतंस

कंसप्रणाशन सनातन केशिनाश ।

भर्ग त्रिनेत्र भव भूतपते पुरारे

त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ८ ॥

गोपीपते यदुपते वसुदेवसूनो

कर्पूरगौर वृषभध्वज भालनेत्र ।

गोवर्धनोद्धरण धर्मधुरीण गोप

त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ९ ॥

स्थाणो त्रिलोचन पिनाकधर स्मरारे

कृष्णानिरुद्ध कमलाकर कल्मषारे ।

विश्वेश्वर त्रिपथगार्द्रजटाकलाप

त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ १० ॥

अष्टोत्तराधिकशतेन सुचारुनाम्नां

सन्दर्भितां ललितरत्नकदम्बकेन ।

सन्नायकां दृढगुणां निजकण्ठगतां यः

कुर्यादिमां स्रजमहो स यमं न पश्येत् ॥ ११ ॥

गणावूचतुः ।

इत्थं द्विजेन्द्र निजभृत्यगणान्सदैव

संशिक्षयेदवनिगान्स हि धर्मराजः ।

अन्येऽपि ये हरिहराङ्कधरा धरायां

ते दूरतः पुनरहो परिवर्जनीयाः ॥ १२ ॥

अगस्त्य उवाच ।

यो धर्मराजरचितां ललितप्रबन्धां

नामावलिं सकलकल्मषबीजहन्त्रीम् ।

धीरोऽत्र कौस्तुभभृतः शशिभूषणस्य

नित्यं जपेत्स्तनरसं न पिबेत्स मातुः ॥ १३ ॥

इति शृण्वन् कथां रम्यां शिवशर्मा प्रियेऽनघाम् ।

प्रहर्षवक्रः पुरतो ददर्श सरसीं पुरीम् ॥ १४ ॥


इति (श्रीस्कन्दपुराणे काशीखण्डे धर्मराजप्रोक्तं

हरिहराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।


पुनर्जन्मनाशकं स्तोत्रम्

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*hariharAShTottarashatanAmastotram*

pdf was typeset on October 28, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

